مَّثَلُ ٱلَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمۡوَٰلَهُمۡ فِي سَبِيلِ ٱللَّهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ
أَنۢبَتَتۡ سَبۡعَ سَنَابِلَ فِي كُلِّ سُنۢبُلَةٖ مِّاْئَةُ حَبَّةٖۗ وَٱللَّهُ يُضَٰعِفُ
لِمَن يَشَآءُۚ وَٱللَّهُ وَٰسِعٌ عَلِيمٌ ٢٦١ ٱلَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمۡوَٰلَهُمۡ فِي
سَبِيلِ ٱللَّهِ ثُمَّ لَا يُتۡبِعُونَ مَآ أَنفَقُواْ مَنّٗا وَلَآ أَذٗى لَّهُمۡ
أَجۡرُهُمۡ عِندَ رَبِّهِمۡ وَلَا خَوۡفٌ عَلَيۡهِمۡ وَلَا هُمۡ يَحۡزَنُونَ ٢٦٢
* قَوۡلٞ مَّعۡرُوفٞ وَمَغۡفِرَةٌ خَيۡرٞ مِّن صَدَقَةٖ يَتۡبَعُهَآ أَذٗىۗ وَٱللَّهُ
غَنِيٌّ حَلِيمٞ ٢٦٣ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ لَا تُبۡطِلُواْ صَدَقَٰتِكُم
بِٱلۡمَنِّ وَٱلۡأَذَىٰ كَٱلَّذِي يُنفِقُ مَالَهُۥ رِئَآءَ ٱلنَّاسِ وَلَا يُؤۡمِنُ
بِٱللَّهِ وَٱلۡيَوۡمِ ٱلۡأٓخِرِۖ فَمَثَلُهُۥ كَمَثَلِ صَفۡوَانٍ عَلَيۡهِ تُرَابٞ
فَأَصَابَهُۥ وَابِلٞ فَتَرَكَهُۥ صَلۡدٗاۖ لَّا يَقۡدِرُونَ عَلَىٰ شَيۡءٖ مِّمَّا
كَسَبُواْۗ وَٱللَّهُ لَا يَهۡدِي ٱلۡقَوۡمَ ٱلۡكَٰفِرِينَ ٢٦٤ وَمَثَلُ ٱلَّذِينَ
يُنفِقُونَ أَمۡوَٰلَهُمُ ٱبۡتِغَآءَ مَرۡضَاتِ ٱللَّهِ وَتَثۡبِيتٗا مِّنۡ أَنفُسِهِمۡ
كَمَثَلِ جَنَّةِۭ بِرَبۡوَةٍ أَصَابَهَا وَابِلٞ فَـَٔاتَتۡ أُكُلَهَا ضِعۡفَيۡنِ
فَإِن لَّمۡ يُصِبۡهَا وَابِلٞ فَطَلّٞۗ وَٱللَّهُ بِمَا تَعۡمَلُونَ بَصِيرٌ ٢٦٥ أَيَوَدُّ
أَحَدُكُمۡ أَن تَكُونَ لَهُۥ جَنَّةٞ مِّن نَّخِيلٖ وَأَعۡنَابٖ تَجۡرِي
مِن تَحۡتِهَا ٱلۡأَنۡهَٰرُ لَهُۥ فِيهَا مِن كُلِّ ٱلثَّمَرَٰتِ وَأَصَابَهُ ٱلۡكِبَرُ
وَلَهُۥ ذُرِّيَّةٞ ضُعَفَآءُ فَأَصَابَهَآ إِعۡصَارٞ فِيهِ نَارٞ فَٱحۡتَرَقَتۡۗ
كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ ٱللَّهُ لَكُمُ ٱلۡأٓيَٰتِ لَعَلَّكُمۡ تَتَفَكَّرُونَ ٢٦٦

Theme

The parable of spending in Charity. What makes charity worthless. Charity vs. showing off.	सदक़ा व ख़ैरात करने की मिसाल। कौन सी चीज़ सदक़ा को बेवक़अत बना देती है। इख़्लास के साथ सदक़ा देना मुक़ाबला रियाकारी और दिखावे के लिए सदक़ा देना।
Tarjumani	
The parable of those who spend their wealth in the way of Allah, is that of a grain that sprouts into seven ears, each bearing one hundred grains. Allah gives manifold increase to whom He wishes. Allah is All-Sufficient for His creatures' needs and All-Knowing. Those who spend their wealth in the cause of Allah and do not follow their charity with reminders of their generosity or injure the feeling of the recipient, shall get their reward from their Rabb; they shall have nothing to fear or to grieve. Kind words and forgiveness are better than charity followed by injury. Allah is Self-sufficient, Forbearing. O believers! Do not make your charity	जो लोग अपने माल अल्लाह की राह में सिर्फ़ करते हैं, उनके ख़र्च कि मिसाल ऐसी है जैसे एक दाना बोया जाय और उससे सात बालें निकलें और हर बाल में सौ दाने हों	इसी तरह अल्लाह जिसके अमल को चाहता है, अफाजूनी आता फरमाता है	वह फराख दस्त भी है और अलीम भी	जो लो अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं और ख़र्च करके फिर एहसान नहीं जताते, न दुख देते हैं, उनका अज्र उनके रब के पास है और उनके किए किसी रंज और खौफ़ का मौका नहीं	एक मीठा बोल और किसी नागवार बात पर ज़रा-सी चश्म-पोशी उस खैरात से बेहतर है जिसके पीछे दुख हो	अल्लाह बेनियाज़ है और दुर्दबारी उसकी सिफ़त है	ऐ ईमान लानेवालो, अपने सदकात को एहसान जताकर और दुख देकर उस सख्त की तरह खाक में न मिला दो जो

worthless by reminders of your generosity or by injury to the recipients feelings, like him who spend his wealth to be seen by people and believe neither in Allah nor in the Last Day. His parable is like a hard barren rock covered with a thin layer of soil; a heavy rain falls, leaving it Just a bare stone. Such people will not gain any reward that they thought they had earned. Allah does not guide the unbelievers. The example of those who spend their wealth to seek the pleasure of Allah and assuring reward for themselves is like a garden on a high and fertile ground: when heavy rain falls on it, it yields up twice its normal produce; and if no rain falls, even a light moisture is sufficient. What-ever you do, is in the sight of Allah. Would any one of you like that his garden, which is full of palm trees, grape vines, and all kinds of fruits and watered by running streams, be blasted and consumed by a fiery whirlwind	अपना माल महज़ लोगों को दिखने के लिए ख़र्च करता है, और न अल्लाह पर ईमान रखता है न आख़िरत पर	उसके ख़र्च की मिसाल ऐसी है, जैसे एक चट्टान थी, जिसपर मिट्टी की तह जमी हुई थी	उसपर जब ज़ोर का मेंह बरसा तो सारी मिट्टी बह गई और साफ़ चट्टान की चट्टान रह गई	ऐसे लोग अपने नज़दीक खैरात करके जो नेकी कमाते हैं, उससे कुछ भी उनके हाथ नहीं आता, और काफ़िरों को सीधी राह दिखाना अल्लाह का दस्तूर नहीं है| बखिलाफ़ इसके जो लोग अपने माल महज अल्लाह की रजाजूई के लिए दिल के पूरे सबात व करार के साथ ख़र्च करते हैं, उनके ख़र्च की मिसाल ऐसी है जैसे किसी सतहे-मुर्ताफा पर एक बाग़ हो	अगर ज़ोर की बारिश हो जाए तो दुगुना फल लाए, और अगर ज़ोर की बारिश न भी हो तो एक हल्की फुहार ही उसके लिए काफी हो जाए	तुम जो कुछ करते हो, सब अल्लाह की नज़र में है| क्या तुममें से कोई यह पसन्द करता है कि उसके पास एक हरा-भरा बाग़ हो, नहरों से सैराब, खजूरों और अँगूरों और हर क़िस्म के फलों से लदा हुआ, और वह ऐन उस वाक्क्त

at the time when he has become too old and his children are too feeble to earn anything? Thus Allah makes His revelations clear to you so that you may ponder over them.	एक तेज़ बगूले की ज़द में आकर झुलस जाए, जबकि वह ख़ुद बूढ़ा हो, और उसके कमसिन बच्चे अभी किसी लायक़ न हों? इस तरह अल्लाह अपनी बातें तुम्हारे सामने बयान करता है, शायद कि तुम गौर व फ़िक्र करो|
Tafsir	